कहानी 1

सपना का पति मनोज शहर में सब्जी का ठेला लगाता था और उसका बाकी परिवार गांव में ही रहता था। बच्चे गांव के ही स्कूल में पढ़ते थे। बड़ा बेटा दीपू अभी नवीं कक्षा में गया ही था कि मनोज ने ये कह कर उसे शहर बुला लिया कि वहां पढ़ भी लेगा और उसके काम में हाथ भी बँटा देगा। परीक्षा पास करने के लिए दीपू प्राईवेट कोचिंग करने लगा।

अब दीपू सुबह पिता के साथ मंडी में सब्जी खरीदने जाता, दिन भर फेरी लगाता और शाम छः बजे जब उसके पिता एक जगह ठेला खड़ा करके सब्जी बेचते तब वह कोचिंग के लिए जाता। बाप–बेटा एक कोठरीनुमा कमरे में रहते थे जहां पर न तो लाईट की खास व्यवस्था थी और न ही शौचालय की।

शहर आकर दीपू का मन पढ़ने में नहीं लगा। यहां पर पढ़ने का न तो वक्त मिलता था और न ही कोई वातावरण था। गांव के स्कूल में दीपू पढ़ाई में अच्छा था पर यहां पढ़ाई करना तो दूर उसके लिए जीना तक मुश्किल हो गया था। नतीजतन जब वह दसवीं के बोर्ड परीक्षा में फेल हो गया तो पिता ने उसे कहा "बेटा, अब पढ़ने–लिखने का खास फायदा नहीं। इस शहर में दसवीं पास लोग भी देहाड़ी पर मज़दूरी कर रहे हैं। मुझे ही देख अनपढ़ जरूर हूं पर

घर का गुजारा तो चला रहा हूं। अगर सब्जी बेचने के काम में मन नहीं लग रहा तो तेरे लिये कोई और काम ढूंढता हूं।" दीपू ने हामी भर दी।

फिर दीपू को – जो अभी मात्र 15 साल का था – शहर के बाहर एक पत्थर खदान में काम पर लगा दिया। यहां उसका मुख्य काम पत्थर तोड़ने का था। यहाँ काम की स्थितियां बड़ी कठिन थीं। दिन भर पत्थर तोड़ने से दीपू के शरीर का रोआं–रोआं दर्द करने लगता। शाम को जब वह वापस आता तो निढाल होकर खाट पर लेट जाता। इस पत्थर खदान में काम करते–करते दो साल गुजर गये। दीपू न केवल कमजोर हो गया, बल्कि उसे लगातार खाँसी की शिकायत रहने लगी। फिर उसकी एक बड़े सरकारी अस्पताल में जांच करायी गई।

डॉक्टर ने कहा – "पत्थरों में उड़ने वाली रेतीली धूल की वजह से उसके फेफड़ों को नुकसान पहुंचा है। अस्पताल आने में देर होता तो और नुकसान हो जाता।" उन्होंने दवाएं लिखीं और दीपू को घर जाकर आराम करने की सलाह दी। उन्होंने दीपू के पिता से कहा, "अगर तुम अपने बच्चे से काम न कराते तो ये दिन देखने को नहीं मिलते। बेहतर होगा कि तुम उसकी आगे कि पढ़ाई जारी रखो।"

सपना और मनोज के दूसरे बच्चों का क्या होगा? क्या दीपू की हालत से सबक लेकर वह अपने दूसरे बच्चों की पढ़ाई पूरी करवाएंगे? क्या वे उन्हें बाल मज़दूर बनने से रोक पाएंगे?

1

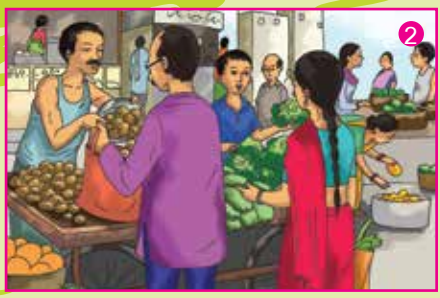
2

3

4

5

6

7

चर्चा के बिन्दुः

- बाल श्रम किसे कहते हैं?
- बाल श्रम के क्या कुप्रभाव होते हैं?
- बाल श्रम के जोखिमपूर्ण रूप क्या है?
- अशिक्षा और बाल मजदूरी का दुष्चक्र पीढ़ी–दर–पीढ़ी कैसे चलता है?
- इस दुष्चक्र को कैसे तोड़ा जा सकता है?
- शिक्षा का क्या महत्व है?

Concept and Design: New Concept Information Systems Pvt. Ltd., New Delhi

Supported by

unicef

unite for children